Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
VOL- IX | ISSUE- I | JANUARY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

स्त्री विमर्श और श्यौराज सिंह बेचैन

प्रकाश चंद्र
शोधार्थी , हिंदी विभाग
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, गुजरात

स्त्री विमर्श साहित्य में व्यक्त एक विचारधारा है जिसके माध्यम से वर्तमान समय में स्त्री की आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा और मान-सम्मान को दिए जाने का एक सशक्त एवं सफल प्रयास है।

आज के समय में नारी के ऊपर होने वाले अत्याचारों के कई रूप हमारे सामने मौजूद हैं इनमें भी पारिवारिक अत्याचार, सामाजिक भेदभाव, छेड़छाड़, बलात्कार, दहेज हिंसा, यौन हिंसा, कामकाजी महिलाओं के साथ होने वाला अवैध, अनैतिक व्यवहार आदि शामिल है। साहित्य समाज में घटित होने वाली घटनाओं को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम या साधन है "समाज में जो हो रहा है उसकी तस्वीर होता है यह तस्वीर आदर्श या यथार्थ के समन्वय के जिस अनुपातिक संयोजन से बनी हो उसमें साहित्यकार या चिंतक या कवि या लेखक का सुधारात्मक या दिग्दर्शनात्मक दृष्टिकोण अवश्य परिलक्षित होता है समकालीन हिंदी साहित्य में 1960 के बाद की विविध सामाजिक स्थितियों संभावनाओं अभाव और आवश्यकताओं की समावेशी अभिव्यक्ति हुई है।"[1]

' स्त्री विमर्श पर विस्तार से चर्चा करने से पहले हमें विमर्श के बारे में जान लेना आवश्यक है डॉक्टर हरदेव बाहरी ने 'हिंदी पर्याय कोष' में विमर्श शब्द के कई अर्थ दिए हैं तबादला ए ख्याल, परामर्श, मशविरा, राय, बात, विचार विनिमय, विचार-विमर्श, सोच, विचार आदि। इन सभी अर्थों से एक बात स्पष्ट हो जाती है कि विमर्श में वह यूरोपीय नारीवाद की उग्रता व कट्टरता नहीं है। नारीवाद में जहां स्त्री को पुरुष केवल बराबर खड़ा कर देती है।वहां नारी विमर्श उभय में सामंजस्य, मैंत्री, बराबरी की भूमिका का निर्माण करता है। स्त्री पुरुष में परामर्श, मशविरा, रायशुमारी, विचार विनिमय हो सकता है विमर्श का तबादला ए ख्याल शब्द गौरतलब है स्त्री विषयक उन सारे ख्यालों को बदलना होगा जिनको स्त्री अस्मिता के खिलाफ इस्तेमाल किया जाता है मसलन स्त्री की बुद्धि तो उसके पैरों में होती है। स्त्री पैरों की जूती है लड़की पराई अमानत है या लड़की या गाय को वहां जाना चाहिए जहां उसे पहुंचाया जाता है।इंदिरा गांधी, सुनीता विलियम्स, कल्पना चावला, किरण बेदी पीटी ऊषा, सानिया मिर्जा, मैरीकॉम, साइना नेहवाल, अरुणिमा सिन्हा, अरुंधति राय, मेधा पाटकर,,,,,। यह सब नाम तबादला ए ख्याल के लिए पर्याप्त रहेंगे।"[2]

भारतीय साहित्य में यह कैसी विडंबना है कि एक ओर साहित्य में स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श का डंका बज रहा है तो दूसरी तरफ इन सभी विमर्शों के प्रति होने वाले अमानवीय कृत्यों एवं शोषण का ग्राफ बड़ी तेजी से ऊपर चढ़ता चला जा रहा है। उदाहरण के रूप में 1 दिन में भारत में 77 महिलाओं का बलात्कार पंजीकृत किया जाता है जबकि इसकी संख्या मीडिया में बहुत कम आती है। निर्भया कांड के बाद भी दुष्कर्म की घटनाओं में कमी की बजाय बढ़ोतरी हो रही है। प्रियंका रेड्डी एवं हाथरस, कुलदीप सिंह सेगर जैसे ज्वलंत मुद्दे समाज की आत्मा को झकझोर देता है। इसलिए यह विमर्श समय के साथ उपयोगी बनता जा रहा है।

'स्त्री विमर्श' की आवाज को साहित्य में प्रचलित करने वाली महादेवी वर्मा का स्थान बहुत ही क्रांतिकारी रहा है वे लिखती हैं "पुरुष का जीवन संघर्ष से प्रारंभ होता है और स्त्री का आत्मसम्मान से। जीवन के कठोर संघर्ष में जो पुरुष विजयी प्रमाणित हुआ उसे स्त्री ने कोमल हाथों से जय माल देकर अपनी स्निग्ध चितवन से अभिनंदित करके और स्नेह प्रवण आत्म-निवेदन से अपने निकट पराजित बना डाला।"[3]

" ' ग्लोबलाइजेशन' के युग में जहां स्त्री पुरुष दोनों पैकेज के तहत 12 से 15 घंटे रोज काम करते हो वहां बच्चों को संस्कार कौन देगा? ऐसे में स्त्री शिक्षा के एवं बाल साहित्य के

निर्माण में महिलाओं की ज्यादा जरूरत मानी जा सकती है। वे विवाह विच्छेद तलाक, दहेज, हत्या, भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, बलात्कार, बाल विवाह आदि समस्याओं से निपटने के लिए शिक्षक चिकित्सक वकील जज पत्रकार सभी क्षेत्रों में स्त्री को आने के लिए प्रेरित करती हैं।"[4]

स्त्री विमर्श की चर्चा में प्रेमचंद नारी के व्यक्तित्व को स्वीकारते हुए उन्होंने उसे एक व्यक्ति के रूप में देखा है, पहचाना है और बिना संकोच के इस सत्य को साहित्य में स्वीकारा है कि " स्त्री पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है जितना प्रकाश अधेरे से।"[5]

एक बहुत प्रचलित देशज कहावत है 'जाके पीर न फटी बिवाई उ का जानै पीर पराई अर्थात। जिसके पैर में विवाई ना हुई हो वह उसकी पीड़ा का अनुभव नहीं कर सकता। " स्त्री की हर आत्मकथा अपनी आत्मकथा ओं की ऐसी दास्तान है जो घर-घर में घटित होती है। पुरुषों की आत्मकथाएं तो उनके निजी संघर्षों की विजय गाथाएं हैं,,,, ।मगर स्त्री की आत्मकथा समाज और परिवार की उन भीतरी सच्चाईयों से साक्षात्कार है जिनकी चुभन जूते की कील की तरह सिर्फ पहनने वाला ही जानता है।"[6]

इन लेखिकाओं के लेखन से यह बात सामने आयी कि स्त्री के बारे में स्त्री द्वारा लिखी बात जितनी प्रमाणिक तथा विश्वसनीय होती है उतनी पुरुषों द्वारा नहीं।प्रभा खेतान लिखती है कि " स्त्री की मुक्त की चर्चा करने वाला पुरुष अपनी हमदर्दी, नेक इरादे तथा अर्थक प्रयासों के बावजूद वर्णन में स्वयं को स्त्री का प्रतिनिधि मानता चला जाता है इस प्रकार स्त्री स्वयं अपना प्रतिनिधित्व स्वयं ही करने के अवसर तथा अधिकारों से वंचित रह जाती है।"[7] पुरुष जगत की अमानवीय साजिशों को प्रसिद्ध लेखिका सिमोन द बुआ उजागर करती हुई कहती है " स्त्री पैदा नहीं होती बल्कि उसे बना दिया जाता है।"[8]

स्त्री मुक्ति के बारे में राजेंद्र यादव लिखते हैं "उसके पास कुछ ना हो मगर देह और मन तो उसके अपने हैं उन्हीं को लेकर हीअपने फ़ैसले ही उसे मुक्ति की नदी की राह दिखाएंगे,,,, क्योंकि,,, सुंदर और स्वतंत्र स्त्री पुरुष के लिए चुनौती है।"[9] आज भारत में स्त्री विमर्श की लगभग सभी महिलाएं प्राचीन ग्रंथों को ही अपनी दुर्गति का जिम्मेदार मान रही है उसमें कौशल्या बसंती, रजनी तिलक, अनिता भारती, मैत्री पुष्पा, श्यौराज सिंह बेचैन, रजत रानी मीनू, ओमप्रकाश बाल्मीकि, विमल थोराट आदि का नाम लिया जाता है जो धर्म ग्रंथों से कतई सहमत नहीं है।

साहित्य में कविता कवि की सहज अनुभूति का सर्वाधिक त्वरित रूप है इसका सहज स्फुटन पाठक के लिए एक सहज ग्राह्य बनकर भाव की एकरसता कायम की है इसलिए कविता अन्य विधाओं से अधिक सशक्त माध्यम बनकर उभरता है साहित्य में भी स्त्री विमर्श एवं दलित अभिव्यक्ति का प्रारंभिक दौर काव्य ही रहा है। कबीर, रैदास के दोहे एवं पदों में तत्कालीन वर्ण एवं जाति व्यवस्था के प्रति गहरी वितृषणा मिलती है उन्होंने तर्क के आधार पर इस भेदभाव का खंडन किया है। श्यौराज सिंह बेचैन दलित साहित्य के अग्रणी लेखकों में से एक हैं उनका चिंतन कबीर और रैदास की वाणी की आधुनिक धार लिए हुए हैं।

समाज में व्याप्त तरह-तरह की वर्जनाएँ स्त्री एवं दलित वर्ग की उपेक्षा और विशेषकर नारी दुर्दशा को लेकर मेरे मन में सदैव एक गहरी चिंता और उथल-पुथल रही है कवि बेचैन इस आजादी को दिखावटी आजादी कहते हैं जहां मानव-मानव एवं स्त्री पुरुष में भेद है।

"जात पात का तनाव ऊंच-नीच भेदभाव
पेट के सवाल का जो दे नहीं सके जवाब।"[10]

"मर्द औरतों में फर्क है अभी जमी पे बेबसी का नरक है अभी दहेज कोढ़ है अभी समाज में, बराबरी कहां है उस रिवाज में।"[11]

कवि श्यौराज सिंह बेचैन डॉक्टर अंबेडकर के संदेश 'शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो कि जीती जागती मिसाल है इतना ही नहीं कवि स्त्री पुरुष को क्षमता का भी सपना सच होता हुआ दिखाई देता है। इस महान संस्कृति वाले देश में दलितों स्त्रियों के लिए कोई स्थान नहीं है। अनेक पाखंडी संत, महात्मा, समाज में अंधविश्वास पैदा करें। और एक वर्ग विशेष तौर पर मौज उड़ाता है। कवि ने इनका पाखंडों से समाज को सचेत किया है जो भाग्य, किस्मत स्वर्ग- नरक का जाल फैलाकर अकर्मण्यता एवं शोषण का वातावरण तैयार करते हैं जैसा कि श्यौराज सिंह ने लिखा है:-

" साधु का भेष आज
डाकुओं का भेष है
दुखी बहुत और चंद खुश
तो क्या स्वतंत्र देश है

साधना के म्यान में भी
वासना कटार है
जलाओ दीप साथियों
की घोर अंधकार है।"[12]

आज के समय में अक्षर ज्ञान जादुई चमत्कार जैसा असर करता है। ' लड़की ने डरना छोड़ दिया' उनकी कविता दलित और स्त्री के लिए अक्षर ही एकमात्र उपाय है। तथाकथित, धर्म ग्रंथों में स्त्री को पराधीन बनाकर रखा गया है जैसे सीता, द्रौपदी, अहिल्या आदि महिलाओं को उनका आदर्श बना दिया गया है परंतु आधुनिक जागरूकता एवं समानता के आंदोलन के द्वारा यह सभी पात्र आदर्श के पदों से खारिज कर दिए गए हैं।

" अक्षर के जादू ने
उस पर असर बड़ा बेजोड़ किया।
चुप्पा रहना छोड़ दिया लड़की ने डरना छोड़ दिया,
हंस कर पाना सीख लिया रोना पछताना छोड़ दिया।"[13]

यहां कभी बेचैन संघर्षरत और बराबरी की चाह रखने वाली स्त्रियों को वाणी प्रदान की है। 'वह उठी' उनकी एक सुंदर कविता है कविता का आरंभ स्त्रियों की बेचैनी को दर्शाता है

"नारी विरोध में
रचे गए उन ग्रंथों में
लुका देती
वह निकल पड़ी बेचैन नारी
पुरषी प्रभुत्व
प्रदत्त प्यार का यह प्रदंड
कैसे रख पाए।"[14]

कवि श्यौराज सिंह बेचैन 'बंधुआ मजदूरिन' कविता के माध्यम से निजी विद्यालयों में शिक्षक शिक्षिकाओं के आर्थिक शोषण की पोल खोल कर रख दिया है। लेखक स्वयं दिल्ली में रहते हुए ऐसे अनुभव से गुजरे हैं ये स्कूल माफिया शिक्षा का सौदा करते हैं और बहुत कम वेतन पर महिलाओं को नौकरी देकर शील और श्रम दोनों का शोषण करते हैं।

कहने को तो हम सभी 21वी सदी वैज्ञानिकों की सदी में रहते हैं लेकिन सोच-विचार, तर्क आदि में हम अभी कोसों दूर हैं क्योंकि स्त्री या महिला के जन्म को आज क्या हमारा समाज स्वीकार करता है? इसीलिए उसे गर्भ में ही नष्ट करवाता है। 'बच्ची ने बच्ची पैदा की' कविता में कवि स्वयं पर भी झल्लाता है कि वह समाज में आमूलचूल परिवर्तन नहीं कर सकता है

"क्या कर पाए
लिख कर चंद
पंक्तियां भी हम
धिक इन आंखों
ने देखा है।"[15]

कवि के आदर्श डॉक्टर अंबेडकर, नेल्सन मंडेला, भगत सिंह आज समाज सेवक हैं जिन्होंने समाज में क्रांति का बिगुल बजा कर उसे नई चेतना एवं उर्जा प्रदान किया। 'खिलाफ' कविता में कवि क्रांति का आह्वान करता है

" वक्त खुद मजबूर कर देगा की सच्चाई सुनो
फिर कलम खंजर बना लो गीत में शोले भरो
सच्चा शायर वो जो लिखे अपने दौरों के खिलाफ।"[16]

वर्तमान समय में देश के समस्त बेरोजगार, कर्मकार एवं स्त्री दलित, आदिवासी आदि को एक सूत्र में बांधकर आंदोलन करने की सलाह देता है। शोषक हमेशा शोषितों को जाति, धर्म, वर्ग, संप्रदाय में बांटकर उनका शोषण करता है। बेचैन ' एकता' को ही समाधान मानते है।' हम एक रहेंगे' कविता में उनका संबोधन दर्शनीय है।

"रोटी की भूख हमसे कह रही है अब उठो
पूंजी के दरिंदों की रीढ़ तोड़ दो
अपने हक-हकूक दुश्मनों से लेकर रहेंगे।"[17]

कवि श्यौराज सिंह बेचैन अल्पायु में ही तमाम इन अच्छाइयों, बुराइयों से अवगत हो चुके थे, समाज की असलियत अगर कोई देखे तो वे उसके जीते जागते उदाहरण है। कवि बेचैन पूरी दुनिया के कमेरों में उत्साह भरते है कि आखिर में जीत हमारी दबी, कुचली, पीड़ित, शोषित स्त्री एवं दलित को आजादी मिल कर ही रहेगी जैसा कि उन्होंने प्रस्तुत पंक्ति में कहा है:-

"दुनिया के कमेरों ने चमत्कार किया है
नाकारों निठल्लों ने सदा खून पिया है
इस जोक-सी फितरत को उभरने नहीं देंगे।"[18]

संदर्भ सूची

1. कल्पना वर्मा (स.), स्त्री विमर्श विविध पहलु, पृष्ठ संख्या-207

2. दिलीप मेहरा (स.) तथा अन्य हिंदी महिला कथाकारों के साहित्य में नारी विमर्श, पृष्ठ संख्या-28
3. महादेवी वर्मा, स्मृति की रेखा, पृष्ठ संख्या-68
4. वही, पृष्ठ संख्या-63
5.प्रेमचंद, कर्मभूमि, पृष्ठ संख्या-273
6. डॉ. सुमन राजे, इतिहास में स्त्री, पृष्ठ संख्या-101-102
7. राजेन्द्र यादव, हंस, मई-2000
8. मधुमती, जनवरी 2003 से उद्धरत।
9. डॉ. सुमन राजे, इतिहास में स्त्री, पृष्ठ संख्या-101-102
10. नई फसल, शेयोराज सिंह बेचैन, पृष्ठ संख्या-03
11. नई फसल, शेयोराज सिंह बेचैन, पृष्ठ संख्या-03
12. क्रोंच हूँ मैं, शेयोराज सिंह बेचैन, पृष्ठ संख्या-14
13.क्रोंच हूँ मैं, शेयोराज सिंह बेचैन, पृष्ठ संख्या-14
14.क्रोंच हूँ मैं, शेयोराज सिंह बेचैन, पृष्ठ संख्या-48
15.क्रोंच हूँ मैं, शेयोराज सिंह बेचैन, पृष्ठ संख्या-33
16. क्रोंच हूँ मैं, शेयोराज सिंह बेचैन, पृष्ठ संख्या-50
17. नई फसल, शेयोराज सिंह बेचैन, पृष्ठ संख्या-38
18. नई फसल, शेयोराज सिंह बेचैन, पृष्ठ संख्या-52